B.A. Semester IV

Papes - I

Foundation of Sociological Thought - II

By —:

Dr. S. Mehdi Abbas Zaidi

Scanned with CamScanner

Unit - II

Max Weber

Scanned with CamScanner

Maximillian Carl Emil Weber
(1864-1920)

Weber का जन्म 21 April 1864 Erfurt, Prussian Saxony Germany में हुआ था इनके पिता Saint Max Weber पेशे से वकील थे 1868 में इनकी family Berlin चली गई। 13 वर्ष की उम्र में इन्होंने Economics, History and Philosophy में महारत (Command) हासिल कर ली और उनकी रुचि Logic में होती थी। Strauss की The Old and New Belief इनकी मनपसंद पुस्तक है। 1884 में इनकी Military Training खत्म हुई और 1891 में इन्होंने History of Agrarian Institution एक महत्वपूर्ण निबन्ध लिखा। 1893 में इनकी शादी Marianne सिगार से हुई और 1884 में इन्होंने Freiberg University में Economics की Lectureship स्वीकार की। इनका Specialization Democracy and Bureaucracy में था। जून 1920 में इनका देहान्त हो गया।

Influence: Dilthey, Rickert.

Case of Death: Pneumonia.

Scanned with CamScanner

Main contribution and Writing:

1- Essay on Sociology (1946)
2- The Protestant Ethic and Spirit of Capitalism (1905)
3- The Theary of Economics and Social Organization (1927)
4- General Economics Theary (1966)
5- The City (1921)
6- The Hindu Social System
7- The Religion of China (1916)
8- Asian India
9- Methodology of Social Sciences (1949)

Influence of Weber's Thinking:

1- Family Condition.
2- Idealistic Philosophy of German
3- Karl Marx
4- Strauss

Scanned with CamScanner

DATE :

Ideal Type
आदर्श प्रारूप

आदर्श — न्यू वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार, "Ideal" जिसका हिन्दी पर्याय 'आदर्श' है, का अर्थ " अधिक से अधिक पूर्णता की स्थिति वाला मानक स्वरूप या धारणा है।" इसकी चर्चा किसी मानसिक छवि या धारणा के रूप में होती है किसी भौतिक पदार्थ के रूप में नहीं। कोलिंस कोबिल्ड इंग्लिश लेंगुएज डिक्शनरी के अनुसार, " किसी संदर्भ में आपका आदर्श वह व्यक्ति या वस्तु होगी जो आपको उस संदर्भ में सर्वोत्तम उदाहरण लगे।"

"Type" जिसका हिन्दी पर्याय "प्रारूप" है, का अर्थ है कोई प्रकार, वर्ग अथवा समूह जिसे अपनी खास विशेषता के कारण अन्य वर्गों से अलग रखा जा सके।" (न्यू वेबस्टर डिक्शनरी, 1985) इस तरह, आम तौर से आदर्श प्रारूप किन्ही वस्तुओं या व्यक्तियों के ऐसे प्रकार, वर्ग या समूह को कहा जा सकता है जिसकी अपनी खास विशेषता अथवा लक्षण हो और वह विशेषता अपने समूह या वर्ग में सर्वोत्तम लगे।

Scanned with CamScanner

वेबर (Weber) ने "आदर्श प्ररूप" का प्रयोग एक विशिष्ट अर्थ में किया। उनके अनुसार "आदर्श प्ररूप" एक मॉडल की तरह, दिमागी तौर पर बनाई गई एसी विधि है जिसके आधार पर वास्तविक स्थिति अथवा घटना को परखा जा सकता है और उसका क्रमबद्ध तरीके से चित्रण किया जा सकता है। वेबर (Weber) ने सामाजिक यथार्थ को समझने और परखने के लिए आदर्श प्ररूप को विचार पद्धति के साधन के रूप में प्रयुक्त किया। विचार पद्धति अवधारणाओं और तर्कों पर आधारित शोध विधि का एसा तरीका है जिससे ज्ञान विकसित होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो सामाजिक विज्ञानों की विचार पद्धति में ज्यादातर जोर इनकी वैज्ञानिक प्रमाणिकता निर्धारित करने पर दिया गया है।

वेबर (Max Weber) की सामाजिक विज्ञानों की वस्तुपरकता के प्रति विशेष रुचि थी। इसलिए उसने आदर्श प्ररूप को विचार पद्धति के एसे साधन के तौर पर प्रयोग किया जो यथार्थ को वस्तुपरक दृष्टि से देखे। यह सामाजिक

Scanned with CamScanner

यथार्थ को किसी व्यक्तिपरक पूर्वाग्रह के बिना परखता है तथा वर्गीकृत, क्रमबद्ध और परिभाषित करता है। आदर्श प्रारूप का मूल्यों से कुछ संबंध नहीं है। शोध के साधन के रूप में आदर्श प्रारूप का प्रयोग वर्गीकरण और तुलना के लिए होता है। मैक्स वेबर (Max Weber) के अनुसार, "आदर्श प्रारूप की अवधारणा शोध कार्य में सम्भावित कारणों की खोज में हमारी मदद करती है। यह यथार्थ का विवरण नहीं है लेकिन इसका उद्देश्य ऐसे विवरण को स्पष्ट अभिव्यक्ति देना है जिन तथ्यों को अनुभाविक शोध के लिए सतर्कता से और जाँच-परखकर एकत्रित किया गया है।" इस दृष्टि से, आदर्श प्रारूप ऐसी अवधारणाएँ अथवा संरचनाएँ हैं, जिनका किसी सामाजिक समस्या को समझने और विश्लेषित करने की विचार पद्धति में साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। Down Martindale "The Nature and Types of Sociological Theory" कहते हैं says- "आदर्श प्रारूप अकाल्पित वास्तविक इकाइयाँ (व्यक्तिगत सामाजिक परिस्थितियाँ परिवर्तन, क्रान्तियाँ, संस्थाएँ, वर्ग इत्यादि) हैं, जिनका निर्माण अनुसंधानकर्ता के द्वारा स्पष्ट तुलना करने के उद्देश्य

से उससे सम्बन्धित निर्माणक तत्वों के आधार पर किया जाता है।

Scanned with CamScanner

Concept of Verstehen
निर्वचनात्मक बोध की अवधारणा

"Verstehen" शब्द जर्मन भाषा का शब्द है। Verstehen का हिन्दी अर्थ निर्वचनात्मक बोध या अर्थ निरूपण की बोधि होता है। इस सिद्धान्त को बोधगम्यता का सिद्धान्त भी कहा जा सकता है। Weber के समाजशास्त्रीय योगदान में इस सिद्धान्त को काफी महत्वपूर्ण माना गया है। Weber ने निर्वचनात्मक बोध की कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं दी, मगर कुछ तत्वों की ओर संकेत किया है। Weber का मत है कि मनुष्य के आचरण दो प्रकार के होते हैं।

प्रथम, प्रकार के आचरण का उद्देश्य बहुत अधिक स्पष्ट होता है। जिससे उसे समझने में कोई परेशानी नहीं होती।

द्वितीय, प्रकार के आचरण वे हैं, जो अत्यन्त गहन और सूक्ष्म होते हैं। इस प्रकार के आचरण को Reflex action कहते हैं। इस प्रकार के

Scanned with CamScanner

आचरण का कोई अर्थ नहीं होता है। केवल आचरण ही ऐसा साधन होता है जिसके द्वारा उसके प्रयोजन या Intention को समझ सकते हैं।

Weber की Verstehen का Concept एक ऐसे विश्लेषण की रचना करता है जिससे मनुष्य के आचरण को समाज के सन्दर्भ में देखकर ही सही निष्कर्ष प्राप्त किया जा सकता है। निर्वचनात्मक बोध के सिद्धान्त ने प्राकृतिक व सामाजिक विज्ञानों के भेद की विवेचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

Weber ने निर्वाचनात्मक बोध के दो प्रकार बताये हैं:

1- Actual Understanding (वास्तविक बोधगम्यता)।

2- Explanatary Understanding (व्याख्यात्मक बोधगम्यता)।

प्रथम बोधगम्यता वह है जो बाह्य आचरण के ज्ञान पर आधारित होती है। दूसरे प्रकार की बोधगम्यता वह है जिसमें निहित प्रयोजनों या लक्ष्यों को नहीं समझा जा सकता है।

DATE:

वास्तविक बोधगम्यता वह है जब किसी प्रति के अनुभव के आधार पर केवल तथ्य को देखने से ही स्पष्ट समझ लिया जाता है। व्याख्यात्मक बोधगम्यता उस प्रयोजन के तत्वों को समझना है, जो विशेष प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में स्पष्ट नहीं होते है अपितु एक समस्या बने रहते हैं।

इस प्रकार, Weber की निर्वाचनात्मक बोध की अवधारणा का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह माना जाता है कि उसमें सामाजिक तथ्यों का विवेचन करने में वैज्ञानिक विधि और मूल्य निर्णयात्मक विधि में अन्तर किया है और Weber ने इस बात पर ज़ोर दिया कि मानवीय सम्बन्धों के अध्ययन में इन दोनों विधियों को कभी मिश्रित नहीं करना चाहिए।

DATE :

Theory of Social Action

सामाजिक क्रिया का सिद्धान्त

अपनी किताब "The Theory of Social and Economic Organization" में Max Weber का मानना है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं के सन्दर्भ में निरन्तर किसी न किसी प्रकार की क्रिया करता रहता है और इस प्रकार की सामाजिक क्रिया में व्यक्ति एक Actor होता है और जब वह क्रिया करता है तो उसमें उसका Personal Interest शामिल होता है कि सामाजिक क्रिया का मतलब उस क्रिया से होता है जिससे दूसरे लोग प्रभावित हो अर्थात उस क्रिया का कुछ अर्थ निकलता हो। Weber समाजशास्त्रियों को एक दिशा प्रदान करना चाहते थे और इस सन्दर्भ में उसने कहा समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया के व्याख्यात्मक बोध का प्रयास करता है ताकि उसकी विशा और परिणाम

Scanned with CamScanner

के कार्य - कारण सम्बन्धों को स्पष्ट किया जा सके। आगे Max Weber इसी में कहते हैं :

Action is Social in So far as by virtue of a Subjective meaning attached to it by the acting, the individual or individuals makes it into account of the behaviour of others and is there by oriented to its course.

इस आधार पर उसने सामाजिक क्रिया की कुछ विशेषताएं बताई :

1- Social Action किसी भी क्रिया को नहीं कहा जाएगा, सामाजिक क्रिया उसी क्रिया को कहा जाएगा जिसमें समाज के दूसरे व्यक्तियों पर हमारी क्रिया का प्रभाव पड़ रहा हो।

2- सामाजिक क्रिया में दूसरे व्यक्तियों का होना भी जरूरी है।

3- सामाजिक क्रिया अन्त: सम्बन्धित होती है और Max Weber उन्हीं क्रियाओं

को सामाजिक क्रिया कहते है जो दूसरो को प्रभावित करती है।

Scanned with CamScanner

Typology of Social Action

Weber क्रियाओं को उनके Modes of orientation के आधार पर चार भागों में बांटते हैं:

1- **Zweck Rational Action**: जब क्रिया को किसी

DATE :

व्यक्तिगत लक्ष्य या लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए तार्किक और विवेक-पूर्ण रूप से किया जाता है और Actor अपनी कार्य दक्षता के दृष्टिकोण से साधनों का चयन करता है तो ऐसी क्रिया Zweck Rational कही जाती है। और ऐसी क्रिया का मुख्य लक्ष्य यह होता है कि यह तार्किक दृष्टिकोण से नियोजित की जाती है। जैसे: किसी वकील या इंजीनियर की क्रियाएँ।

2- **West Rational Action**: इस श्रेणी में व्यक्ति की वह क्रियाएँ आती हैं जिनका कि लक्ष्य भौतिक सफलता न होकर किसी आदर्श की प्राप्ति के सन्दर्भ में की जाती है और इसमें विवेक और तर्क high-level का शामिल होता है। जैसे: आज़ादी की लड़ाई में महात्मा गाँधी द्वारा चलाया गया आन्दोलन।

भावात्मक व संवेगात्मक क्रिया

3- **Affectual & Emotional Action**: इसके अन्तर्गत व्यक्ति की उन क्रियाओं को शामिल

किया जाता है जो प्रत्यक्ष रूप से भावनाओं से जुड़ी होती है। जैसे: क्रोध, क्लेश, द्वेष आदि क्रियाएँ ऐसी क्रियाएँ है जो मूल्य और परम्परा के द्वारा समझी जाती है न कि बुद्धि और तर्क के द्वारा। इन क्रियाओं को भावना और संवेगों के आधार पर ही समझा जा सकता है। उदाहरणार्थ: झगड़े में कोई किसी के माँ-बाप को बुरा-भला कह दे तो दूसरा पलट कर थप्पड़ मार देता है।

परम्परागत क्रिया

4- **Traditional Action:** इस श्रेणी के अन्तर्गत व्यक्ति की वह क्रियाएँ आती हैं जो बहुत लम्बे समय के अभ्यास या आदत द्वारा संचालित होती है और प्रथाओं और परम्पराओं का रूप ले कर सामने आती है। जैसे: नवयुवकों का बड़ों के पैर छूना, सलाम करना या आदर करना, सुबह उठ कर पूजा-पाठ करना आदि।

यूरोप में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रसार और औद्योगिक क्रान्ति के आ जाने के बाद क्रिया के दूसरे प्रारूपों की तुलना

Scanned with CamScanner

में विवेकपूर्ण और तार्किकपूर्ण क्रियाओं पर ज्यादा जोर दिया गया। आधुनिक पूँजीवाद, कर्मचारीतंत्र और दूसरा Corporation के अन्तर्गत जो क्रियाएँ सम्पन्न हो रही है। उसमें तर्क और विवेक पर ज्यादा जोर है इसलिए Weber ने इस प्रारूप पर विशेष ध्यान दिया और Weber द्वारा आधुनिक पूँजीवाद, कर्मचारीतंत्र को आदर्श प्रारूप के रूप में अध्ययन करना होगा।

✓

Protestant Ethics And The Spirit Of Capitalism
प्रोटेस्टेन्ट आचार और पूँजीवाद की आत्मा

धर्म के समाजशास्त्र के अन्तर्गत ही Weber ने धर्म और पूँजीवाद के Relations की व्याख्या की है। दुनिया के महान धर्मों का अध्ययन करने के लिए Weber ने एक प्रकल्प तैयार किया। इनका उद्देश्य धर्म का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस अध्ययन का प्रकाशन 3-होने 3 जिल्दों में प्रस्तुत किया। इनकी योजना दुनिया के 6 बड़े धर्मों -

1- कन्फ्यूशियस धर्म,
2- बौद्ध धर्म,
3- हिन्दू धर्म,
4- यहूदी धर्म,
5- ईसाई धर्म,
6- इस्लाम धर्म।

के अध्ययन की थी। अपने जीवन काल में वे इस्लाम और यहूदी धर्म का अध्ययन नहीं कर पाए।

Scanned with CamScanner

DATE:

वेबर ने जब ईसाई धर्म और पूंजीवाद के सह-सम्बन्ध को रखा तब वे जानते थे कि उनकी इस Thesis को लेकर गलतफहमी हो सकती है। इस कारण उन्होंने विशेष रूप से यह कहा कि Protestant Religion और Capitalism के relations को Mechanical Relations की तरह नहीं लेना चाहिए। Weber ने अपने स्पष्टीकरण में कहा था कि "मनुष्य के जीवन में जो Rationalization (विवेकीकरण) है, उसका स्रोत Ethos (लोकाचारों) में था Religious Ethos ने ही Spirit of Capitalism को विकसित किया। दूसरे शब्दों में, लोगों के जीवन में जो तार्किकता और विवेकीकरण होते है, वे सब Protestant Religion के Ethos या Code of Ethics से प्राप्त होते है। हालांकि पूंजीवाद का कारण लोकाचार ही नहीं है। जबकि Weber का उद्देश्य तो पूंजीवाद की आत्मा के विकास की खोज करना है। यहाँ पर Raymond Aron के दिये गया कथन है जो इस प्रकार है

"प्रोटेस्टेन्ट धर्म केवल एक कारण नहीं है लेकिन पूंजीवाद के कई कारणों में एक है। इससे

अधिक यह कहना चाहिए कि पूँजीवाद के कतिपय पहलुओं में केवल यही एक कारण है।"

Weber के कहने का तात्पर्य यह है कि Western Capitalism में कुछ ऐसे लक्षण थे जो भारत, रोम और चीन में पूँजीवाद के पदों में नहीं थे। ईसाई धर्म में कई सम्प्रदाय है। धर्म, विज्ञान और दर्शन की दृष्टि से इन धार्मिक सम्प्रदायों में अन्तर है, लेकिन जहाँ तक नीति संहिता और लोकाचार का प्रश्न है सभी सम्प्रदायों में आचार समान रूप से पाए जाते हैं। Weber का आशय यह है कि यदि Protestant, Catholic, Press Bitarion आदि धार्मिक सम्प्रदायों का धर्म-विज्ञान (theology) की दृष्टि से विश्लेषण करें तो हमें अन्तर मिलेगा, यदि हम इनके आचारों को देखते तो उनमें समानता मिलेगी।

Weber ने सिद्धान्त के रूप में यह रखा कि धार्मिक विश्वास और व्यवहार Motivations को जन्म देते हैं और इन्हीं की सहायता से व्यक्ति धार्मिक क्रियाएँ करता है। Weber ने Ideal Types में इन्हीं Motivations को रखा है, क्योंकि यह Motivations

बहुत सुसंगत होती हैं। इनमें कहीं भी ऐतिहासिक यथार्थता नहीं झलकता है। Weber तो केवल Rational Utopian के माध्यम से यह खोजते हैं कि किस तरह यह अभिप्रेरणाएँ पूंजीवाद की आत्मा को बनाने के लिए वास्तविक रूप से काम करती है।

Scanned with CamScanner

पूँजीवाद क्या है?

What is Capitalism? : Max Weber की पूँजीवाद की परिभाषा Marx से नहीं मिल रही थी। सच में देखा जाए तो Weber ने Marx की ऐतिहासिक विधि से अत्याधिक प्रभावित थे। बाद में Marx पूँजीवाद की अवधारणा जो Classical Economics Theory के निकट थी वह Weber को प्रभावित न कर सकी। Weber ने कहा कि पूँजीवाद की व्यवस्था में एवं व्याख्या में उद्यम (Enterprises) एक बुनियादी इकाई है। संगठित पूँजीवादी व्यवस्था में Enterprises में Profit लेना मुख्य

Scanned with CamScanner

उद्देश्य है। बाज़ार में जो आदान-प्रदान होता है खरीद-फरोख्त होती है, उस में धन को उपलब्ध करना और लाभ या Profit लेना केन्द्रीय लक्ष्य होता है। अतः Weber का तर्क है कि जब किसी पूंजीवादी संगठन की स्थापना होती है तो उसका मात्र उद्देश्य अधिकतम मुनाफा लेना होता है।

Parsons ने Weber द्वारा परिभाषित पूंजीवादी व्यवस्था पर टिप्पणी लिखी है। वे लिखते हैं, "पूंजीवाद का अस्तित्व प्रत्येक स्थिति में बाज़ार के सम्बन्धों पर निर्भर है। Parsons कहते हैं कि, "पूंजीवाद एक ऐसी व्यवस्था है" जिसका उद्देश्य मुनाफा प्राप्त करना है। यह मुनाफाखोरी बाज़ार के सम्बन्धों से बंधी होती है।"

Raymond Aron के अनुसार, "Weber ने पूंजीवाद के सत्व (Essence) को जिस तरह ग्रहण किया है उसके अनुसार इस व्यवस्था का उद्देश्य अधिकतम मुनाफा लेना है और इस मुनाफे का स्रोत काम और उत्पादन का तार्किक संगठन है।"

Spirit Of Capitalism : Weber जिसको पूंजीवाद की आत्मा कहते हैं। उसे समझने के लिए हमें Weber के Social Action के सिद्धान्त को ध्यान में रखना होगा। Weber के अनुसार, " सामाजिक क्रिया वह गतिविधि है जिसके पीछे कर्ता के मूल्य और अर्थ निहित होता है। "

Weber के लिए सामाजिक क्रिया उद्देश्य प्रेरित होती है, क्रिया को करने के लिए "मूल्य" और "मानक" होते हैं, जिसे Weber ने साध्य-साधन के रूप में रखा है। Weber जब पूंजीवाद का उल्लेख करते हैं तो मूल्यों की भूमिका को भी निश्चित करते हैं। उनकी दृष्टि में Spirit का अर्थ Geist, मूल्य से है। आर्थिक गतिविधियों के प्रति जो मानसिक गतिविधियां या अभिवृत्तियाँ होती हैं

वे ही पूँजीवाद की आत्मा या Spirit है। Parsons ने Weber द्वारा दी गई पूँजीवाद की आत्मा पर टिप्पणी करते हुए कहा कि :-

"मनुष्य की वे मानसिक अभिवृत्तियाँ, जिनका स्त्रोत या अभिस्थापना आर्थिक गतिविधियों के लिए होती है, पूँजीवाद की आत्मा है।"

Definition Of Spirit of Capitalism :- वास्तविकता तो यह है कि पूँजीवाद की आत्मा अपनी प्रवृति में मानसिक है। धन के प्रति लोगों का जो मानसिक दृष्टिकोण होता है वही पूँजीवाद की आत्मा है। America में पूँजीवाद का सम्बन्ध उपयोगिता-वाद से लिया जाता है। यहाँ पुनर्जन्म के चक्र में विश्वास नहीं रखते, उनके लिए जो कुछ भी है यही इसी जन्म में है। इस लिए उनके यहाँ "खाओ - पिओ और मौज करो" जबकि भारत में पूँजीवाद के प्रति कुछ धारणा अलग है, यहाँ 'पैसे' को "माया" कहा जाता है, "लक्ष्मी" कहा

Bureaucracy
अधिकारीतंत्र

अधिकारीतंत्र वास्तव में Weber द्वारा बनाए गए आदर्श प्ररूप (Ideal Type) का वृतान्त है। 19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रान्ति की जड़ मजबूत हो गई थी, जब सामान्य साहूकार किसी व्यवसाय को करता था तो उसमें किसी भी तरह के अधिकारीतंत्र की व्यवस्था नहीं करता था लेकिन जब औद्योगिक क्रान्ति प्रारंभ हुए तो उसके परिणामस्वरूप विशाल तादाद में उत्पादन शुरू हुआ किसी न किसी प्रकार के अधिकारीतंत्र की आवश्यकता आवश्यक हो गई या पड़ने लगी। यद्यपि औद्योगिक क्रान्ति के पहले भी सरकारी कार्यों में अधिकारीतंत्र की व्यवस्था तो थी मगर औद्योगिक क्रान्ति ने अधिकारीतंत्र को और अधिक सुदृढ़ किया और उसे विस्तृत रूप भी दिया।

आधुनिक युग में व्यक्तियों की गतिविधियों को समझने के लिए किसी न किसी तरह के अधिकारीतंत्र

Scanned with CamScanner

की आवश्यकता अवश्य रहती है। इस तंत्र की बड़ी विशेषता यह है कि इसकी बुनियाद युक्ति संगत सिद्धान्तों पर होती है। अधिकारीतंत्र का संगठन और उसके काम-काज करने की पद्धति अत्यावश्यक नियमों पर चलती है। इसमें काम करने वाले व्यक्तियों को विभाग दे दिये जाते हैं और अपने Specialization के आधार पर ये विभाग अपना काम-काज करते हैं। इस प्रकार Bureaucracy जन्म-जाति लक्षणों पर नहीं चलाई जाती, बल्कि इस का आधार Speacialization होती है। अधिकारीतंत्र की व्यवस्था केवल सरकार और कारखानों में ही नहीं है बल्कि उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में भी देखा जा सकता है। हमारे देश में ही देखें कि यहाँ Educational Institutes में Bureaucracy की आवश्यकता बराबर बनी रही है।

Definition Of Bureaucracy:- अंग्रेजी शब्द Bureaucracy में दो शब्द शामिल हैं:

Bureau + Cracy = Bureaucracy

Bureau का अर्थ है Office (कार्यालय या दफ्तर) और Cracy का तात्पर्य तंत्र या शासन (administration) से है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि किसी भी प्रतिष्ठान को चलाने के लिए अधिकारी तंत्र की आवश्यकता होती है। इसलिए Bureaucracy को Finer ने Desk Government (मेज-प्रशासन) कहकर सम्बोधित किया है। वैसे : Bureaucracy के हिन्दी स्पष्टक तो कई हैं जैसे : नौकरशाही, सेवकतंत्र, राज्यतंत्र आदि।

यहाँ जिन अर्थों में नौकरशाही की विवेचना की जाती है, वह आधुनिक विचार है। अधिकारी तंत्र या नौकरशाही उस व्यवस्था को कहते हैं "जिसके अन्तर्गत सरकारी कार्यों का संचालन एवं निर्देशन उन व्यक्तियों के हाथों में होता है, जिसे Administration द्वारा इस कार्य के लिए Appoint किये जाते हैं।" ये कर्मचारी विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किये होते हैं।

Max Weber के अनुसार, " A System of administration characterized by expertness, impartiality and absense

of humanity"

" यह एक प्रकार का प्रशासकीय संगठन है जिसमें विशेष योग्यता, निष्पक्षता तथा मनुष्यता का अभाव आदि लक्षण पाए जाते हैं।"

यदि Weber की परिभाषा को analysis करें तो पता चलता है कि -

1- यह एक प्रशासनिक व्यवस्था है।
2- इस प्रशासनिक व्यवस्था की निम्न विशेषताएं हैं :-

a- विशेष योग्यता ;
b- निष्पक्षता ;
c- मनुष्यता का अभाव।

Scanned with CamScanner

Authority And Power
सत्ता और शक्ति

Power : सामान्य प्रयोग में "शक्ति" का अर्थ है "ताक़त अथवा "नियंत्रण की क्षमता।"

समाजशास्त्री इसकी परिभाषा एक व्यक्ति अथवा समूह की अपनी इच्छा पूर्ण करने तथा अपने निर्णयों एवं विचारों को कार्यान्वित करने के सामर्थ्य के रूप में करते हैं। इसमें दूसरों की इच्छा के विपरीत भी उन्हें प्रभावित करने अथवा उनके आचरण को नियंत्रित करने की क्षमता निहित है।

Max Weber के अनुसार, "शक्ति सामाजिक संबंधों का एक पहलू है। इसका सम्बन्ध एक व्यक्ति द्वारा दूसरे के आचरण पर अपनी इच्छा थोपने की सम्भावना से है।" शक्ति का अस्तित्व सामाजिक अन्तर्क्रिया में है और यह असमानता की स्थितियाँ पैदा करती है क्योंकि जिसके हाथ में शक्ति है वह इसे दूसरों पर थोपता है। शक्ति का प्रभाव अलग-अलग स्थिति में अलग-अलग होता है।

Scanned with CamScanner

एक ओर यह प्रभाव शक्तिशाली व्यक्ति की क्षमता पर निर्भर करता है। Webes की मान्यता है कि जीवन के सभी क्षेत्रों से शक्ति का प्रयोग संभव है।

यह युद्ध क्षेत्र अथवा राजनीति तक ही सीमित नहीं है। इसे बाज़ार, भाषण मंच तथा किसी सामाजिक समारोह, खेल-कूद, वैज्ञानिक गोष्ठियों और यहाँ तक कि परोपकार की गतिविधियों में भी देखा जा सकता है। उदाहरणार्थ दान अथवा भिक्षा देना अपनी आर्थिक शक्ति प्रदर्शित करने का एक सूक्ष्म तरीका है। एक अमीर व्यक्ति अपनी आर्थिक शक्ति द्वारा भिकारी को कुछ देकर उसे खुश कर सकता है और इंकार करके उसे निराश भी कर सकता है।

Authority And Its Types
सत्ता तथा उसके प्रकार

हेरशॉफ्ट

सत्ता के लिए वेबर द्वारा प्रयुक्त German शब्द "(Herrschaft") का अनुवाद कई रूपों में हुआ है। कुछ समाजशास्त्रियों ने इसे authority कहा है, जबकि कुछ विद्वानों ने इसका अनुवाद domination अथवा Command किया है। Herrschaft का अर्थ है, ऐसी स्थिति जिसमें herr अथवा स्वामी अन्य पर प्रभुत्व जमाता है अथवा हुक्म चलाता है। रेमों आरों के अनुसार, हेरशाफ्ट की परिभाषा स्वामी की वह क्षमता, जिससे वह उन लोगों से आज्ञापालन करवाता है जो सैद्धान्तिक रूप से उसके प्रति आज्ञाकारी है।" इस प्रकार Weber ने "Herrschaft" की अवधारणा को सत्ता शब्द द्वारा व्यक्त किया है।

Robert Micheal's Authority in Encyclopeadia of Social Sciences

" सत्ता को किसी एक समूह

Scanned with CamScanner

पर अधिकार स्थापित करने की सहज अथवा अर्जित क्षमता मानते हैं।

The Theory of Social and Economic Organization में Max Weber सत्ता का सम्बन्ध शक्ति से मानते हैं और वैध शक्ति (Legitimate Power) को ही "सत्ता" कहते हैं।

सत्ता शक्ति का एक विशिष्ट प्रकार है और इसे राजनीतिक व्यवस्था की आत्मा भी कहते हैं। शक्ति को परिस्थितियों के आधार पर दो श्रेणियों में बाँट सकते हैं:-

1- Legitimate Power वैध शक्ति
2- Illegitimate Power. अवैध शक्ति

जब शक्ति का प्रयोग इस तरीके से किया जाए कि वह सामान्य रूप से उचित प्रतीत हो तब वह "वैध शक्ति" है और जब शक्ति का प्रयोग सामाजिक मान्यता के बिना ही लोगों को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है तो उसे "अवैध शक्ति" कहते हैं।"

Scanned with CamScanner

सत्ता के बारे में 3 बातें महत्वपूर्ण हैं :

1. इसका प्रयोग स्पष्ट रूप से परिभाषित संस्थात्मक भूमिकाओं के ताने-बाने के रूप में किया जाता है।

Father - Son, Teacher - Student, Owner - Servant. (पिता - पुत्र, अध्यापक - विद्यार्थी, शासक - शासित)

2. सत्ता सम्बन्ध संस्थागत होते हैं।

Scanned with CamScanner

इसमें प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार एवं कर्तव्य स्पष्ट एवं विशिष्ट होते हैं। उनके व्यवहार का अनुमान लगाया जा सकता है।

3- सत्ता अनौपचारिक पदों को धारण करने वाले व्यक्तियों के पास उपलब्ध साधनों में से एक है। कुछ विद्वानों का मानना है कि शक्ति दण्ड, भय की धमकी के कारण व्यक्तियों/घटनाओं को अनुपालन के लिए बाध्य करती है और इसी से समाज में स्थायित्व आता है। समाज में स्थिरता इसलिए है कि शक्ति को वैधता मजबूत करती है। सत्ता द्वारा ही सामाजिक क्रियाओं का परिचालन होता है।

Types Of Authority: सत्ता का अभिप्राय "वैधता" से है। Weber के अनुसार वैधता की 3 प्रणालियाँ हैं और इनमें से प्रत्येक के अनुरूप नियम है, जो आदेश देने की शक्ति को औचित्य प्रदान करते हैं। वैधता को इन्हीं

3 प्रणालियों को सत्ता के प्रकारों का नाम दिया गया है वे है :

1- पारम्परिक सत्ता (Traditional Authority)
2- करिश्माई या चमत्कारिक सत्ता (Charismatic Authority)
3- तर्क - वैधानिक सत्ता (Rational-Legal Authority).

1- Traditional Authority : वैधता की यह प्रणाली पारम्परिक सामाजिक क्रिया से निरूपित होती है। दूसरे शब्दों में, यह व्यवहारिक कानून पर तथा प्राचीन परम्पराओं की मान्यता पर आधारित है। इसका आधार यह विश्वास है कि किसी विशेष सत्ता का सम्मान किया जाना चाहिए क्योंकि वह युग-युगान्तरों से चली आ रही है।

पारम्परिक सत्ता के अन्तर्गत शासक पीढ़ी-दर-पीढ़ी मिली प्रस्थिति के कारण व्यक्तिगत सत्ता का उपभोग करते है। उनके आदेश रीति-रिवाजों के अनुरूप होते है और उन्हें शासित लोगों से अपना आदेश मनवाने का भी अधिकार होता है। प्रायः वे अपनी शक्ति का दुरुपयोग

Scanned with CamScanner

करते है। जो लोग उनके आदेशों का पालन करते है, वे उनकी प्रजा कहलाते है। यह प्रजा व्यक्तिगत निष्ठा के कारण अथवा प्राचीन काल से मान्यता प्राप्त पद के प्रति पारंपरिक सम्मान के कारण अपने स्वामी के आदेशों का पालन करती है। उदाहरणार्थ, भारत में प्रचलित जाति-प्रथा, जिसमें "निम्न" जातियाँ सदियों तक "उच्च" जातियों के अत्याचार सहती रही, जिसका कारण "उच्च" जातियों की सत्ता को परम्पराओं तथा प्राचीन मान्यताओं का समर्थन प्राप्त रहा।

इस प्रकार यह देखा जाता है कि पारम्परिक सत्ता प्राचीन परम्पराओं को पवित्र मानने के विश्वास पर आधारित है। इससे सत्ता का प्रयोग करने वालों को वैधता प्राप्त हो जाती है।

पारंपरिक सत्ता का संचालन लिखित नियमों और विधानों के अन्तर्गत नहीं होता। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी विरासत में मिलती है। पारंपरिक सत्ता का कार्य-क्षेत्र संबंधियों तथा समर्थकों के बल पर किया जाता है।

2- **Charismatic Authority**: करिश्मा (चमत्कार)

शब्द का शब्दकोशीय अर्थ है "ईश्वरीय वरदान"। यह ईश्वर की कृपा से मिली योग्यता होती है। Weber के अनुसार, "दूसरों पर लागू एक प्रकार की वैध शक्ति है जिसे लोग सत्ता के रूप में मानते हैं।" जिस व्यक्ति के पास करिश्मे का गुण है उसकी सत्ता दैविक ध्येय, अन्तर्दृष्टि, नैतिक गुण आदि से सम्बन्धित मिथक के रूप में देखी जा सकती है। इस प्रकार, यह सत्ता कुछ व्यक्तियों के असाधारण गुण है। ऐसे गुणों से इन व्यक्तियों में सामान्य लोगों की निष्ठा तथा भावनाओं पर अधिकार कर लेने की क्षमता आ जाती है। करिश्माई सत्ता किसी व्यक्ति के प्रति असाधारण आस्था और उस व्यक्ति द्वारा बनाई गई जीवन-शैली पर आधारित होती है। ऐसी सत्ता की वैधता

व्यक्ति की अलौकिक अथवा मायावी शक्ति में निहित होती है। ऐसे नेता चमत्कार, सैनिक या अन्य प्रकार की विजयों अथवा अपने अनुयायियों की आकस्मिक समृद्धि के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। जब तक ये करिश्माई नेता अपने अनुयाइयों अथवा समर्थकों की नजर में अपनी चमत्कारिक शक्तियों को सिद्ध करते रहते हैं, तब तक उनकी सत्ता बराबर बनी रहती है। करिश्माई सत्ता से जो सामाजिक क्रिया जुड़ी है वह भावात्मक क्रिया है। करिश्माई नेताओं के प्रपंचों तथा उपदेशों के प्रभाव से समर्थक अत्यन्त भावुक हो जाते हैं। यहाँ तक कि वे अपने नेता की पूजा करते हैं।

करिश्माई सत्ता परम्परागत विश्वासों अथवा लिखित नियमों पर आधारित नहीं होती। यह अपनी विशेष योग्यता के बल पर शासन करने वाले नेता के विशेष गुणों का ही परिणाम होती है। करिश्माई सत्ता संगठित नहीं होती, अतः इसमें कर्मचारियों अथवा प्रशासनिक तंत्र की आवश्यकता नहीं होती। नेता और उसके सहयोगियों का अपना

कोई निश्चित व्यवसाय नहीं होता और वे प्रायः पारिवारिक दायित्वों से विमुख रहते हैं। ये गुण कभी-कभी चमत्कारिक व्यक्तियों को करिश्माई बना देते हैं, क्योंकि वे सभी परम्परागत सामाजिक प्रतिमानों तथा दायित्वों को अस्वीकार कर चुके होते हैं।

व्यक्तिगत गुणों पर आधारित होने के कारण सम्बद्ध नेता की मृत्यु अथवा उसके लापता होने की स्थिति में उत्तराधिकार की समस्या पैदा होती है। जो व्यक्ति नेता का स्थान लेता है, सम्भव है कि उसमें वैसा चमत्कारिक शक्ति न हो। ऐसी स्थिति में नेता का मूल संदेश लोगों तक पहुँचाने के लिए जब किसी प्रकार का संगठन विकसित होता है तब मूल करिश्माई सत्ता या तो पारम्परिक सत्ता या तर्क-विधिक सत्ता का रूप ग्रहण कर लेती है। Weber के अनुसार, "यह करिश्मा अथवा चमत्कार का सामान्यीकरण है।"

Scanned with CamScanner

3- **Rational-Legal Authority:** यह शब्द "तर्क-विधिक सत्ता" सत्ता की उस प्रणाली का बोध कराता है, जो तार्किक भी है तथा कानूनी भी। यह सत्ता नियमित कर्मचारी वर्ग में निहित है, जो कुछ लिखित कानूनों एवं नियमों के अन्तर्गत काम करते हैं जो लोग इस सत्ता का प्रयोग करते हैं उन्हें इसी काम के लिए नियुक्त किया जाता है और ये नियुक्ति उसकी योग्यताओं के आधार पर की जाती है। ये योग्यताएँ निर्धारित तथा संहिताबद्ध होती हैं। जिन के पास यह सत्ता होती है, उनका यह व्यवसाय होता है तथा वे इसके लिए वेतन पाते हैं। इस प्रकार यह एक "तार्किक प्रणाली" है।

यह वैधानिक (Legal) इसलिए है क्योंकि यह देश के कानून के अनुरूप है जिसे मान्यता देते हैं और उसका पालन करना अपना कर्तव्य समझते हैं। लोग आदेशों और नियमों तथा उन नियमों को कार्यान्वित करने वालों की स्थिति तथा पद दोनों

को वैधता को स्वीकार करते हैं एवं उसका सम्मान करते हैं।

तर्क - विधिक सत्ता आधुनिक समाज का विशिष्ट पहलू है। यह तार्किकता की प्रक्रिया की अभिव्यक्ति है। Weber ने तार्किकता को पाश्चात्य सभ्यता की मुख्य विशेषता माना है। Weber के अनुसार, यह मानव चिन्तन तथा विचार-विमर्श की विशेष देन है।"

उदाहरणार्थ: लोग कर समाहर्ता (tax-collector) की आज्ञा मानते हैं क्योंकि उसके द्वारा जारी किये जाने वाले Notice की वैधता में सब को विश्वास है क्योंकि उसे लोगों को tax सम्बन्धी Notice भेजने का कानूनी अधिकार है।

Max Weber इस प्रकार से नौकरशाही "Bureaucracy" को वैधानिक सत्ता का एक Ideal Type मानते हैं।

Scanned with CamScanner